21-12-1967 सतगुरू ओम शान्तिः वार है प्रातः क्लास

पतित पावन रूहानी बेहद का बाप बैठ समझाते है। बच्चे समझते है कि बेहद का बाप परमपिता निराकार ही कहेंगे। वो तो पावन ही है। एक को ही याद करते है। बाकी तो ब्रहमा भी नही तो विष्णु भी नही जिनको कि याद करें। याद करने का पात्र है ही एक। विष्णु को भी याद करेन की दरकार नही है। बुधी से

****

समझा जाता है कि जो ल-न थे वो पुर्नजन्म लेकर पतित ही बन चुके है। बच्चों की बुधी मे सारा आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। बच्चे जानते है कि सिवाय पतित पावन बाप के यह ज्ञान कोई दे ही नही सकता है। अभी तुम पुरूषार्थ करते हो मुक्ति जीवन मुक्ति का। वहां तो मुक्ति से उतर कर जीवनमुक्ति मे आते है। कौन? ल-न। सो ही फिर पूरे 84 पुर्नजन्म लेते है। चक्र को तो अभी समझ गये हो नां। बाप ने समझाया है कि एक तो है ईश्वरिय मत। दुसरी है आसुरी मत। देवताई मत तो कोई दे नही सकते। देवताय है ही वहां पर जो कि मत दें? देवताई मत यहां पर मिल नही सकती। बाकी तो मानव मत ही कहेंगे। मानव मत से बच्चे समझते है कि नीचे ही उतरते आते है। फिर जब ईश्वरीय मत मिले तो ही देवता बनें। जैसे यहां पर आसुरो की मत चलती है वैसे ही वहां पर देवताओं की मत चलती है। वहां तो दुःख की बात ही नही। शास्त्रो मे तो बाते लिख दी है कि कृष्ण को कंस का डर था.....। देवताओं को किसीका डर होता है क्या? नही। बाकी शास्त्रो मे तो झूठी बाते है भक्ति मार्ग की। अभी तो तुम हो ज्ञान मार्ग में। जैसे झाड के पत्ते अथाह है वैसे ही भक्ति का भी बहुत पसारा है। ज्ञान तो बीज जितना है। बाप भी है ज्ञान का सागर। ज्ञान का बीज तो थोडा होता है भक्ति तो कितनी अथाह है। अब तुम बच्चों को बीज रूप ज्ञान सागर ने यह ज्ञान दिया है। उनको याद तो सभी करते है। कहते है कि काश ईश्वर तुमको अच्छी मत देवे जो कि तुम सुधर जाओ। ईश्वर की मत से ऐसे(ल-न)सुधरे है नां। कितनी इनकी महिमा है। अब बाप समझाते है कि बच्चे अपन को आत्मा समझो। अब हमको ~~वापिस~~ जाना हैं। पतित आत्मायें तो जा न सके। बाप कहते हैं याद से ही तुम्हारे पाप कटेंगे। यह शिक्षा आत्माओं को परमात्मा बाप ही दे सकते हैं। कहते हैं अपन को आत्मा समझो। क्योंकि अभी नंगा ही जाना हैं। ~~वहां~~ देवताओं को तो ऐसे नहीं कहेंगे नंगे जाना हैं। उन्हों को तो नीचे ~~उतरना~~ उतरना ही हैं। भिन्न2 नाम रूप लेना हैं। नाम बिगर तो कारोबार चल न सके। अनेक आत्मायें अपने शरीर साथ पार्ट बजा रही हैं। अभी सभी का पार्ट खतम होना हैं। जाना हैं वापस। बाप राय बहुत अच्छा देते हैं। एक तो कहते हैं पवित्र रहो। बाबा से पूछते हैं बच्चे की शादी करावें। तो बाबा अभी कर के डायरेक्शन नहीं देते हैं। समझते हैं चल न सकेंगे। नहीं तो बच्चा अगर पवित्र रहने लिए बाप का आज्ञा न माने तो वह बच्चा बच्चा नहीं। परन्तु इतनी ताकत नही हैं जो श्रीमत ~~पर~~ पर चले। न चलते तो नाफरमान बरदार ठहरे। बाप तो कहेंगे उनको समझाओ। ~~परन्तु~~×~~नहीं~~ पवित्र बनो। बाप का कहना न मानता तो वह कपुत बच्चा हो गया। बाबा देखते हैं इन मे इतनी ताकत नहीं हैं जो डायरेक्शन देवें। बाबा देखते हैं यह ठहरें न सकेंगे। खान-पान के लिए तो बाबा समझाते ही हैं। इसका भी तो असर पड़ता हैं ना। यहां तो बाप की मत पर एक्युरेट चलना पड़े। वहू के हाथ का भी खाना न हैं। परन्तु चल न सके। इसलिए बाबा पहले से ही कह देते हैं विघ्न बहुत पड़ेंगे। अबलाओं पर अत्याचार भी होते हैं। बाप तो ऐसे नहीं करेंगे जो झगड़ा पड़े। ~~प्र~~यह (बाबा) कितना रायल जवाहरी थाँ। भाईयों को भी लखपति बना दिया। पहले तो गरीब थे। शाहुकार लोग गरीब पर हाथ रख चढ़ाते हैं। तो भाईयों को भी चढ़ाया। फिर जब देखा पवित्रता की बात तो कितना बिगर पड़े। बड़ा हंगामा हो गया। यह तो डरा नहीं क्योंकि बाप की प्रवेशता थी ना। बाप की डायरेक्शन मिलती हैं तो श्रीमत पर चलना~~xx~~×पड़े। नहीं तो देवता कैसे बनेंगे। जो मत पर नहीं चलते सो फिर पद भी कम हो जाता हैं। राजधानी स्थापन हो रही हैं। सभी तो डायरेक्शन पर चल न सके। जो नहीं चलते हैं उनको वफादार, आज्ञाकारी कह न सकेंगे। ईश्वरी मत पर तो पूरा चलना पड़े ना। हुकुमी हुकुम चलाये राह। ईश्वर का

हुकुम होता हैं ना।मानेंगे नहीं तो ऊंच पद पा न सकेंगे।बाकी थोड़ा ज्ञान लिया हैं तो स्वर्ग में आ जावेंगे। बस खुश हो जाते हैं।यह नहीं समझते हैं स्वर्ग में भी अनेक मर्तबे हैं।बाप जानते हैं कि यह ईश्वरी फरमान पर नहीं चल सकते हैं।ताकत नहीं।तो जरूर पद भी ऐसा पावेंगे।स्वर्ग की स्थापना तो एक बाप ही करते हैं। बच्चों को मत देते रहते हैं।तुम ईश्वरीय मत से कितना ऊंच बनते हो।और तो सब लड़ाईयां आद से राजाई लेते हैं। अच्छा यह ल०ना० कैसे विश्व के मालिक बने।जरूर सत्यनारायण की कथा सुनी।लड़ाई की तो बात ही नहीं।तो यह बड़ी समझने की बातें हैं। बाप तो समझ जाते हैं यह ज्ञान उ०ठा सकेंगे या नहीं। चाल, चलन बोलने-करने, खाने-पीने आद सारी चाल से बाप समझ जाते हैं।मौत तो सर पर खड़ा हैं।अचानक एक्सीडेन्ट आद क्या2 होते रहते हैं।सतयुग में यह बातें होती नहीं।वहां काल खाता नहीं।वह हैं ही अमरलोक।जो अच्छी रीत समझते हैं वह तो झट पुरुषार्थ करते हैं। कहां बाप की अवज्ञा न हो।अज्ञान काल में तो कोई2 बच्चा ऐसे कपुत होते हैं जो बाप को पादर लगा देते हैं। शूट भी कर देते। वहां तो ऐसी बात होती नहीं।यहां हैं ही आसुरी स्वभाव वाले।वहां हैं दैवी स्वभाव वाले।पारलौकिक बाप के बन गये तो फिर लौकिक को कुछ दे न सके। शादी कराने का भी असर तो पड़ जाता हैं ना।क्योंकि हाथ डालते हैं। वह काम चिता पर बै० और आदि मध्य अन्त दुःख पावेंगे फिर मां- बाप दोनों फंस पड़ते हैं। यह ज्ञान की बातें बड़ी महीन हैं। थोड़े में ही खुश न होना हैं। मनुष्यों पास तो करोड़ों रुपये हैं।पदमपति भी हैं।वह सब हैं अल्प काल का। तुम तो 21 जन्म लिए पदमपति बनते हो।वह तो आज हैं कल अचानक मर जाये फिर क्या होगा। कुछ भी नहीं। इसके लिए सन्यासी कहते हैं काग विष्टा समान सुख हैं। उन्हों को स्वर्ग के सुखों का पता ही नहीं हैं। अभी तुम समझते हो सिवाय बाप के मुक्ति-जीवन मुक्ति का रास्ता कोई बताये नहीं सकते।सीढ़ी के चित्र पर कोई समझ जाये तो अहो सौभाग्य।बाप ने समझाया हैं यह राजाई स्थापन होती हैं। राजाएं भी नम्बरवार उतरते जावेंगे। थोड़ी देर से आने से दुनिया कुछ तो पुरानी होगी ना। मकान पुराना होता हैं तो मरम्मत करानी होती हैं। बच्चे समझते हैं अब हम नई दुनिया में जावेंगे । नई दुनिया सतयुग को ही कहा जाता हैं। उसमें भी 100 वर्ष के बाद कहेंगे यह 100 वर्ष का पुराना है। लाईफ का तो टाईम लेना चाहिए ना। जाना चाहिए सतयुग आद में।इसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। अभी तुम यह समझ गये हो आत्माएं नम्बरवार कैसे उतरती हैं। जैसे उतरती हैं वैसे ही वहां जाकर खड़ी हो जावेंगी। जैसे चन्द्रमा स्टार आद भी आकाश तत्व में खड़े हैं ना। किसी आधार पर हैं क्या। वैसे आत्माएं भी महातत्व में खड़ी हो जाती हैं। जैसे स्टार्स चमकते हैं, वैसे निराकारी दुनिया में आत्माएं चमकती हैं।महसुस करते हो हम यह शरीर छोड़ ऐसे जाकर महातत्व में लटकेंगे।आधार कुछ भी नहीं होता। मनुष्यों को इन बातों का कुछ भी पता नहीं हैं। भल यहां सुनते भी हैं परन्तु बहुत हैं जिनको कुछ भी धारणा नहीं होती।कुछ भी समझते नहीं। उनके लिए जैसे यह फ्रेन्च बोली है। भक्ति मार्ग वाले भी तुम्हारे पास ऐसे आवेंगे कुछ भी समझेंगे नहीं। भक्ति ही याद आती रहेंगी।क्योंकि उनमें भभका हैं। इसमें तो शान्त रहना पड़ता हैं। अपने बाप को याद करना हैं।स्वधर्म में टिकना हैं।आत्मा का स्वधर्म है शान्ति।अब शान्तिधाम तो वह ठहरा ना।यहां तो शान्ति होती नहीं।यहां तो कर्म करना पड़ता हैं। सतयुग में तुम्हारा विकर्म नहीं बनता।क्योंकि रावण नहीं हैं।देह अभिमान होता नहीं। यहां तो देहाभिमान में आकर कितने उल्टे-सुल्टे काम करते हैं।यह नालेज हैं। इसमें एक तो पवित्र भी रहना पड़े।कोई तो भल पवित्र भी रहते हैं परन्तु नालेज बुधि में बैठती नहीं जो समझा सके।कुमारियां हैं पवित्र तो है ,कोई की बुधि में बिलकुल बैठता ही नहीं। नम्बरवार दर्जे तो होते हैं ना। बाप से आकर मिलते हैं तो बाबा समझ जाते हैं यह साधारण बच्चा है। बुधि इतनी चमत्कारी नहीं है तो पद भी ऐसे ही पावेंगे साधारण।बाप कहते हैं कोई भी अपवित्र का काम कायदे के

मिक्स न करना है। बुधि में याद रखो हमको तो अब वापस जाना है। 84 का चक्र पूरा हुआ। शरीर भी पुराना है। हम आत्मा जैसे नंगे आये थे अब वैसे ही नंगे जाना हैं। पावन बनना है योग बल से। न बनेंगे तो फिर सज़ा खानी पड़ती हैं। इस समय सब की वाणप्रस्त अवस्था है। भक्ति मार्ग में पुरूषार्थ करने वाले जीवनमुक्ति धाम जा न सके। पतित-पावनसदगति दाता वह बाप ही हैं। यह तो अभी है रौरव नर्क। बच्चे को शादी कर-ाना माना रौरव नर्क में ढकेलना है। समझना हैं इस में हम मदद करता हूं यह पाप चढ़ता है। पापात्मा बन जाता हूं। बुधि से ~~काम~~ काम लेना चाहिए। मुरली में खबरदार रहने की तो सब बाते आती हैं। कोई पाप किया तो वह सौगुणा हो जाता हैं। ज्ञान में आकर कोई ऐसा पाप करे, बच्चे को खुश करने तो दोष आ ~~जाता~~ जाता है। यह है किसको खून करना। बुधि में नहीं आता हैं काम कटारी से तो ~~है~~ एक दो का खून करेंगे। इसमें बहुत सहन भी करना पड़ता हैं। बाप सुनते हैं तो बाप को तरस भी आता हैं। औरों को भी सावधान करने बाबा समझाते हैं। अपने हाथों से बच्चों को खून न करना। बाबा से पूछेंगे तो बाबा कहेंगे भल कराओ। ज्ञानवान खुद समझते हैं। और समझ भी सकते हैं। पर कब पूछेंगे नहीं। बच्चियों की तो शादी करानी ही है। आपे ही जाकर डूबते हैं तो उनको तो कराना ही पड़े। बच्चा तो भल खराब हो जाये। उनका ख्याल नहीं रहेगा। मंजिल हैं बड़ी ऊँची। टीचर को ~~x~~ स्टूडन्ट अच्छे वही लगेंगे जो अच्छे मार्कस से पास होते हैं। बहुत स्टुडन्ट फेल हो जाये तो आब्रू ही चली जाये। यह तो बाप कहते हैं मैं कल्प2 आकर बच्चों को समझाता हूं। कल्प2 पुरूषार्थ अनुसार जो पद पाया है वह ही पावेंगे। बाप समझाये देते हैं ~~और~~ कोई भी पाप न करना। नहीं तो डन्ड चढ़ता ही रहेगा। मंजिल हैं, बहुत हैं जो कुछ भी समझते नहीं। जैसे पिंजरे में आये फंसे हैं। कितने आश्चर्यवत कथन्ती, सुनन्ती भागन्ती हो गये। माया के पास जाते हैं तो माया खातरी बहुत करती हैं। जैसे हिन्दु से क्रिश्चन बनते हैं तो वह खातरी करते हैं ना। यह भी माया के बनते हैं तो माया सुख बहुत देती हैं। माया भी कम थोड़े ही हैं। बड़ी शक्तिवान हैं बाप को आलमाईटी कहते हैं परन्तु माया भी आलमाईटी हैं। एकदम रौरव नर्क में ढके ल देती हैं। वह भी कम शक्तवान नहीं। मैं इन से सर्वशक्तिवान हूं। वह मैं से ~~कम~~ शक्तिवान हैं। माया के तरफ जाने से वह जैसे ~~रावण~~ रावण घर्~~के~~ के बन जाते हैं। तुम इस घर्म में कितना सुख उठाते हो। तुम्हारी कितनी खातरी होती हैं। तो बाप समझाते हैं ऐसी2 भूलें मत करो। पद भ्रष्ट हो जावेगा। ~~x~~ अच्छे बच्चे बहुत मेहनत करते हैं सर्विस में। समझाते2 गला ही घुट जाता हैं। तभी भी सर्विस करे छोड़ते नहीं। हमको तो सर्विस कर भारत को स्वर्ग तो बनाना ही हैं। यह बाबा ने डियुटी दी हैं। बेसमझ को बाप कितना समझदार बनाते हैं। उनके श्रीमत से कितना ऊंच बनना हैं। टाईम हैं बाकी थोड़ा। विनाश के समय तो ज्ञान उठाये न सकेंगे। मयता आद में ही मुंझ पड़ती। जो पक्के होते हैं उनके लिए मिरवा मौत मलू का शिकार। सर्विस एबुल बच्चे ही बाबा को याद पड़ते हैं। जो बहुतों को आपसमान बनाते हैं। उनको ही ~~अतिन्द्रि~~ अतिईन्द्रिय सुख रहता हैं। कोई भी मित्र-सम्बन्धी आद याद नहीं पड़ते। आप मुये मर गई दुनिया। बाबा को फालो करने वाले कब दुनियावी बातें पूछे भी नहीं। बाबा समझ जाते हैं उनकी लागत हैं। बाप समझाते तो बहुत सहज हैं। नर्कवासी से स्वर्ग वासी बनना हैं। नर्कवासियों से फिर दिल बिल्कुल हट जाती हैं। कोई तो और ही बहुत सम्बन्ध जुटाये देते हैं। बहुत फर्क रहता हो, बाबा से पूछे तो बाबा झट बतावेंगे इस हालत में तुम्हारा शरीर छूट जाये ~~x~~ तो साधारण प्रजा में जावेंगे। बाप समझ जाते हैं यह ऊंच सीढ़ी चढ़ न सके। तुमको याद करना हैं शिव बाबा को। घर को भी याद नहीं करना हैं। घर में जो बाप रहते हैं उनको याद करना हैं। घर ब्रह्म तत्व को सन्यासी याद करते हैं। तुमको तो शिव बाबा को याद करना हैं। दूसरा न कोई। मेहनत करते रहे तब वह अवस्था हो। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते। नमस्ते। ओम।